AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में जाति के आधार पर नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author

डॉ. राघवेन्द्र सिंह सिकरवार,

सहायक प्राध्यापक,

संत योगी मान सिंह शिक्षा महाविद्यालय,

ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

शिक्षा, जगत् के उत्कर्ष की आधार शिला है। आज तक के सभी शिक्षा आयोगों ने भी शिक्षा में आध्यात्मिकता एवं मूल्यों के महत्व को स्वीकार किया है। कुछ महान विभूतियों की बात अगर छोड़ दें तो सामूहिक रूप से हम सभी लोग अपने मूल्यों एवं नैतिक सिद्धाँतों का पालन नहीं कर पाए। यही कारण है कि लंबे समय से धीर–धीरे इन मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है और आज भी हम मूल्य ह्रास के दौर से गुजर रहे है। वर्तमान में यह नही कहा जा सकता है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था श्रेष्ठ कोटि के नागरिकों का निर्माण कर पा रही है। यदि वर्तमान में कोई कमी दिखाई दे रही है तो वह है हमारी शिक्षा का मूल्यपरक न होना। वास्तव में शिक्षा और नैतिक मूल्यों को अलग नहीं किया जा सकता है। नैतिक मूल्यों से रहित शिक्षा का कोई अर्थ नहीं है। नैतिक मूल्य ही हमारे व्यवहार में जीवमात्र के प्रति दया, करूणा, ममता और प्रेमभाव विकसित करते है इसलिये समस्त विद्यालयी क्रियाकलापों में यथोचित नैतिक मूल्यों के विकास को प्रेरित करने वाली परिस्थितियाँ पैदा करनी होंगी और विद्यालय के परिवेश को प्रेरणा का स्रोत बनाना होगा, तभी छात्रों में शिक्षा द्वारा नैतिक मूल्यों का विकास सम्भव हो सकेगा।

मुख्य शब्द

नैतिक मूल्य, अगड़ी जाति, पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति.

परिचय

नीति शास्त्र की उक्ति है–''ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः।'' अर्थात् ज्ञान से हीन मनुष्य पशु के तुल्य है। ज्ञान की प्राप्ति शिक्षा या विद्या से होती है। दोनों शब्द पर्यायवाची हैं। 'शिक्ष' धातु से शिक्षा शब्द बना है, जिसका अर्थ है–विद्या ग्रहण करना। विद्या शब्द 'विद' धातु से बना है, जिसका अर्थ है–ज्ञान पाना।

शिक्षा की प्रक्रिया युग सापेक्ष होती है। युग की गति और उसके नए–नए परिवर्तनों के आधार पर प्रत्येक युग में शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य के साथ ही उसका स्वरूप भी बदल जाता है। यह मानव इतिहास की सच्चाई है। मानव के विकास के लिए खुलते नित–नये आयाम शिक्षा और शिक्षाविदों के लिए चुनौती का कार्य करते है जिसके अनुरूप ही शिक्षा की नयी परिवर्तित–परिवर्धित रूपरेखा की आवश्यकता होती है। शिक्षा की एक बहुत बड़ी भूमिका यह भी है कि वह अपनी संस्कृति, धर्म तथा अपने इतिहास को अक्षुण्ण बनाए रखे, जिससे कि राष्ट्र का

गौरवशाली अतीत भावी पीढ़ी के समक्ष द्योतित हो सके और युवा पीढ़ी अपने अतीत से कटकर न रह जाए।

सामाजिक जीवन की व्यवस्था के लिए कुछ नियम बनाए जाते हैं, जब ये नियम धर्म से संबंधित हो जाते हैं तो उन्हें नैतिक नियम कहते हैं और उनके पालन करने के भाव अथवा शक्ति को नैतिकता कहते हैं। धर्म और नैतिकता मनुष्य की आधारभूत आवश्यकता है। बिना उनके उसे मनुष्य नहीं बनाया जा सकता, अतः इनकी शिक्षा की व्यवस्था अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

आज ऐसी शिक्षा की आवश्कता है, जो पूरे समाज और देश में नैतिकता उत्पन्न कर सके। यह नैतिकता नैतिक शिक्षा के द्वारा ही उत्पन्न की जा सकती है। चूँकि संस्कृत में नय धातु का अर्थ है जाना, ले जाना तथा रक्षा करना। इसी से शब्द 'नीति' बना है । इसका अर्थ होता है ऐसा व्यवहार, जिसके अनुसार अथवा जिसका अनुकरण करने से सबकी रक्षा हो सके। अतः हम कह सकते हैं कि नैतिकता वह गुण है, और नैतिक शिक्षा वह शिक्षा है, जो कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति सम्पूर्ण समाज तथा देश का हित कर करती है।

वर्तमान समय में शिक्षक को चाहिए कि सामाजिक परिवर्तन को देखते हुए उच्च शिक्षा में गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए केवल अक्षर एवं पुस्तक ज्ञान का माध्यम न बनाकर शिक्षित को केवल भौतिक उत्पादन–वितरण का साधन न बनाया जाए अपितु नैतिक मूल्यों से अनुप्रमाणित कर आत्मसंयम, इंद्रियनिग्रह, प्रलोभनोपेक्षा तथा नैतिक मूल्यों का केंद्र बनाकर भारतीय समाज को, अंतर्राष्ट्रीय जगत की सुख–शान्ति और समृद्धि का माध्यम तथा साधन बनाया जाय। ऐसी शिक्षा निश्चित ही 'स्वर्ग लोके च कामधुग् (कामधेनु) भवति।' कामधेनु बनकर सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली और सुख–समृध्दि तथा शान्ति का संचार करने वाली होगी।

पाश्चात्य देशों के समाजों में धार्मिक और नैतिक शिक्षा के अभाव के कारण अनेक गंभीर दोष उत्पन्न हो गए हैं। अतः वहां के अनेक महान विचारकों की यह धारणा बन गई है कि धार्मिक और नैतिक शिक्षा के द्वारा छात्रों में उचित मूल्यों का समावेश किया जाना अनिवार्य है क्योंकि भारतीय समाज में भी पाश्चात्य समाजों के कतिपय दोष दृष्टिगोचर होने लगे हैं। अतः उनका उन्मूलन करने के लिए पाश्चात्य विचारकों की धारणा के अनुसार यहाँ भी कार्य किया जाना आवश्यक है।

'विश्वविद्यालय शिक्षा–आयोग' के प्रतिवेदन में अंकित ये शब्द अक्षरशः सत्य हैं, "यदि हम अपनी शिक्षा–संस्थाओं से आध्यात्मिक प्रशिक्षण को निकाल देंगे, तो हम अपने सम्पूर्ण ऐतिहासिक विकास के विरुद्ध कार्य करेंगे।

हरबर्ट के अनुसार– "नैतिक शिक्षा, शिक्षा से पृथक नहीं है, जहाँ तक नैतिकता और धर्म का अर्थ है इन दोनों का अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर है। इस बात को इस प्रकार कहा जा सकता है कि धर्म के बिना नैतिकता का और नैतिकता के बिना धर्म का अस्तित्व नहीं है।"

उद्देश्य

1. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् अगड़ी जाति एवं पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
3. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
4. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

1. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत अगड़ी जाति एवं पिछड़ी जाति के बी.एड.

प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के बी.एड.प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों में प्रशिक्षणरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श तालिका

तालिका 01

संख्या	अगड़ी जाति से सम्बन्धित	पिछड़ी जाति से सम्बन्धित	अनुसूचित जाति से सम्बन्धित	अनुसूचित जनजाति से सम्बन्धित	महायोग
प्रशिक्षणार्थियों की संख्या	100	100	100	100	400

परिसीमन

1. शोध अध्ययन को ग्वालियर जिले तक सीमित रखा गया है।
2. शोध अध्ययन को ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तक सीमित रखा गया है, जिसमें बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को शामिल किया गया है।
3. शोध अध्ययन को बी.एड. प्रशिक्षणार्थी जो अगडी जाति, पिछडी जाति, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति से सम्बन्धित हैं, प्रत्येक जाति से सम्बन्धित 100 प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित किये गये हैं तक सीमित रखा गया है।

प्रयुक्त शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. ए. सेन गुप्ता एवं ए. के. सिंह द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मापनी नामक परीक्षण का उपयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु शोधार्थी ने मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, प्रामाणिक त्रुटि, क्रांतिक अनुपात, स्वतंत्रता अंश एवं सार्थकता स्तर का प्रयोग किया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना–1: ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् अगड़ी जाति एवं पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 02

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	$S.E_{d.}$	C.R.	विश्वास स्तर	
अगड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थी	100	17.60	6.65	0.94	2.81	0.05	1.97
पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थी	100	20.25	6.00			0.01	2.60

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त अगड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 17.60 एवं पिछडी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 20.25 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.81 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 दोनों से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य, अगड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों से उच्च हैं।

परिकल्पना 02: ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 03

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	S.E$_{d.}$	C.R.	विश्वास स्तर	
पिछड़ी जाति के बी. एड. प्रशिक्षणार्थी	100	20.25	6.65	0.88	5.26	0.05	1.97
अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थी	100	15.62	5.80			0.01	2.60

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 20.25 एवं अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 15.62 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी. आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 5.26 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 दोनों से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य, अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों से उच्च है।

परिकल्पना 03: ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 04

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	S.E$_{d.}$	C.R.	विश्वास स्तर	
पिछड़ी जाति के बी. एड. प्रशिक्षणार्थी	100	20.25	6.65	0.88	2.78	0.05	1.97
अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थी	100	17.80	5.80			0.01	2.60

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त पिछडी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 20.25 एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों मध्यमान 17.80 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.78 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 दोनों से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य,

अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों से उच्च है।

परिकल्पना 04: ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 05

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	S.Ed.	C.R.	विश्वास स्तर	
अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थी	100	15.62	5.80	0.80	2.66	0.05	1.97
अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थी	100	17.80	5.80			0.01	2.60

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 5 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 15.62 एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 17.80 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.66 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 दोनों से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य, अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों से उच्च है।

निष्कर्ष

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या के उपरान्त यह जानने की स्वाभाविक इच्छा उत्पन्न होती है कि सम्बन्धित समस्या पर आधारित शोध कार्य की उपलब्धियाँ व निष्कर्ष क्या हैं? शोध अध्ययन में प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार प्रस्तुत हैंः

परिकल्पना–1: ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत अगड़ी जाति एवं पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध में तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त अगड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 17.60 एवं पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 20.25 है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.81 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 दोनों से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य, अगड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों से उच्च हैं।

अतः कहा जा सकता है कि हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई, अर्थात् ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालयों में प्रशिक्षणरत् अगड़ी जाति एवं पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया है।

परिकल्पना 02: ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् पिछडी जाति एवं अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध में तालिका 03 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के

नैतिक मूल्यों का मध्यमान 20.25 एवं अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 15.62 है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 5.26 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 दोनों से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य, अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों से उच्च है।

अतः कहा जा सकता है कि हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई, अर्थात् ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया है।

परिकल्पना 03: ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध में तालिका 04 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 20.25 एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थीयों के नैतिक मूल्यों मध्यमान 17.80 है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.78 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 दोनों से अधिक है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य, अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों से उच्च है।

अतः कहा जा सकता है कि हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई, अर्थात् ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया है।

परिकल्पना 04: ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध में तालिका 05 से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 15.62 एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का मध्यमान 17.80 है।

मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये सी.आर. के मान की गणना की गई है। गणना से प्राप्त CR का मान 2.66 है जो 198 df पर t के सारणीयन मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 दोनों से अधिक है।

अतः कहा जा सकता है कि हमारी शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई, अर्थात् ग्वालियर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया है।

संदर्भ सूची

1. कल्याण 'शिक्षांक' सम्पादक– राधेश्याम खेमका, गीताप्रेस, गोरखपुर, वर्ष 1988।

2. पाण्डेय, रामशकल, *शिक्षा के दार्शनिक और समाज शास्त्रीय आधार,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (उ. प्र.)।
3. पुरकैत, बी. आर. (1986) *न्यू एजुकेशन इन इंडिया,* अम्बाला, असोसिएट्स पब्लिशिंग, अम्बाला।
4. गीत, भाई योगेंद्र (1990) *शिक्षा सिद्धान्त की रूप रेखा,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. चौबे, सरयू प्रसाद, *तुलनात्मक शिक्षा,* अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

वेबसाइट्स

1. www.google.com
2. www.wikipedia.org

——==00==——